N. C. Zamindar
M.A., LL.B.
ADVOCATE

Phone ; 32473
BADA RAWLA, JUNI INDORE
INDORE CITY
Pin 452-004

1102

Date 16.8. 1983

My dear Shri Masani,

Please find herewith a copy of my article " Arajkata " (Anarchy) in Hindi released by the Sarvodaya Press Service and published in dozens of Papers.

It mentions the creed of the Swatantra Party.

I will like to have your views on Swarajya - Sangam - political movement of Sarvodayis.

With best wishes.

Encl- One.

Yours sincerely
N. Zamindar
(N.C. Zamindar)

To,

Shri M.R.Masani,
Army and Navy Bldg.
148, M.Gandhi Road,
BOMBAY 400-023.

* SWATANTRA PARTY Creed
- 1983 -

सर्वोदय प्रेस सर्विस
162, तिलक पथ ☆ इन्दौर–452004 ☆ ☎ 32808

प्रकाशनार्थ

सप्रेस आलेख : 48: 83-84

(कृपया 27 जुलाई '83 से पूर्व प्रकाशित न करें ।)

अराजकता : सर्वनाश का निमंत्रण

(निरंजन जमींदार)

इसमें कोई संदेह नहीं कि देश में अराजकता फैलती जा रही है । 1959 में स्व0 राजाजी ने 'विनाश की ओर' पुस्तिका स्वतंत्र पार्टी के लिये लिखी थी । उस समय उन्होंने आज की अराजकता के विरुध्द चेतावनी दी थी पर हमने उसे प्रतिक्रियावादी, सामंतवादी आदि फिकरे कस कर रद्दी की टोकरी में डाल दिया । हम हमारे संविधान के संतुलन को भूलकर शाब्दिक जालों में फंस गये ।

1959 में स्वतंत्र पार्टी ने गांवों में पेयजल की समस्या को प्राथमिकता दी थी । 1983 में श्री चन्द्रशेखर ने पदयात्रा के बाद उसे ही प्राथमिकता दी, 1959 से 1983 तक शासन और राजनीतिज्ञों ने उस पर ध्यान नहीं दिया । प्रश्न पार्टियों का नहीं है, प्रश्न है देश की प्राथमिकताओं पर ध्यान देने का ।

आचार्य राममूर्त्ति जैसे तटस्थ और पैने विचारक ने बिहार में फैली हुई हिंसा के संबंध में लिखा है – "यदि हिंसा की आग बिहार का दरवाजा तोड़ कर आगे निकली तो सारे देश में या तो सम्पूर्ण अराजकता होगी या साम्यवाद और सर्वनाश होगा ।"

मेरा निष्कर्ष है कि अराजकता होगी । साम्यवाद स्थापना के लिये जिन स्थितियों का बखान किया जाता है, वह यहां नहीं है ।

असम में सरकारी हिंसा, पंजाब में अकालियों की हिंसा, उत्तरप्रदेश में डकैतों की हिंसा में कोई योजना नहीं है । नक्सलवाद के नाम पर असामाजिक तत्वों का नंगा नाच चल रहा है ।

इसे हम क्रान्ति नहीं कह सकते । यह अराजकता है । राजनीति का अपराधीकरण (क्रिमीनलाईझेशन) हो गया है । असामाजिक तत्व नई बर्बरता पर उतारू हैं । 'द वीक' साप्ताहिक के अनुसार नक्सलवादी क्षेत्र के कथित क्रांतिकारी आज तस्कर व्यापार में लगे हैं ।

जहां नेता लखपति बन रहे हैं वहां सामान्य आदमी का योजनाबध्द दरिद्रीकरण होता जा रहा है । यदि व्यक्ति तिकड़मी नहीं है, सांठ-गांठ नहीं कर शासन और समाज की न्यायप्रियता पर विश्वास करता है तो वह निश्चय ही सड़क पर भिखारी के रूप में दीखता है । कहीं कोई स्थान नहीं है । यह सर्वनाश का निमंत्रण है ।

अराजकता यह चल नहीं सकती पर आज राजकता कहां है ? कौन इस समय ढाढस बंधा सकता है ?

यह विवेचन निराशावाद फैलाने के लिये नहीं किया जा रहा है । इसमें यथार्थ और आम हालात से चार आंखें करने के लिये किया जा रहा है । धर्म, जिसे हम मूल्य (व्हेल्यूस) कह सकते हैं, का लोप हो गया है । आज धर्मक्षेत्र नहीं है वरन् मूल्यहीन मरुस्थल का विस्तार दीख रहा है । किसी पर दोषारोपण करने का [illegible] नहीं है वरन् जो है उस पर ध्यान देने का आग्रह है ।

सप्रेस आलेख : 48: 83-84

आचार्य राममूर्ति के शब्दों में – "इस हिंसा के अजायबघर" में आज की स्थिति के भविष्य का संकेत है । यह संकेत भयावह है । प्रकृति का खूनी संघर्ष बुध्दि के उपयोग से और खूनी हो गया है । यदि सामान्य आदमी अपनी सुरक्षा, अपने परिवार की सुरक्षा के लिये मूल्यहीन अनैतिकता को स्वीकारे तो क्या हम उसे दोष दे सकते हैं ?

हम भारत के करोड़पतियों का उदाहरण लें । उन पर आप्रवासी भारतीय पूंजीपतियों का भय छा गया है । उसके पीछे की राजनीति का विवेचन यहां गैर मौजू है । कौन-सा भारतीय करोड़पति अपनी सुरक्षा के लिये अनैतिक हथकंडों का प्रयोग नहीं करेगा ? बम्बई में चल रही कपड़ा मीलों की हड़ताल में हजारों श्रमिकों ने अपना अस्तित्व बनाये रखने के लिये दूसरे मजदूरों को बेकार बनाने में कोई झिझक नहीं बतलायी । यह अपेक्षा कि मनुष्य अपनी कमजोरियों से उपर उठेगा, ठीक है, पर आज वह अपनी कमजोरियों को दूर नहीं कर पाया है और वे घिनोने रूपों में दिखाई देती है ।

मैं एक ऊँचाई पर खड़ा होकर उपदेश देने की वृत्ति को उचित नहीं मानता । हम सब मिट्टी के पुतले हैं । हम सब कमजोरियों से भरे हैं । तो ऐसे आदमी की अराजकता के समय में क्या भूमिका होगी ? लगता यह है कि वह अपनी सुरक्षा के लिये अनैतिकता के रास्ते अपनाएगा । इससे चौंकने की जरुरत नहीं है । देश में कोई विकल्प और दूसरा राजकता का रास्ता नहीं है ।

मार्क्सवाद हिंसा के दर्शन को सही मानता है और इसलिये यह अराजकता की हालत उसे अपने सपने की हालत दीख सकती है पर आज की हालत में मार्क्सवाद कौन-सी राजकता दे सकता है ? पश्चिम बंगाल में प्रतिवर्ष डेढ़ हजार हत्याएं होती है । पिछले तीन बरसों के प्रकाशित आंकड़े इसके गवाह हैं । नक्सलवादी, कांग्रेस (ई), कम्युनिस्ट (मार्क्सिस्ट) सभी एक दूसरे पर सैकड़ों हत्याओं के आरोप -प्रत्यारोप करते हैं । अनेकों समाचार पत्रों में विशेषकर साप्ताहिकों में इनके वर्णन और चित्र भी छप रहे हैं ।

पुलिस और सेना का मनोबल इतना टूट गया है कि उनसे रक्षा की आशा करना व्यर्थ है । यह मनोबल क्यों और कैसे टूटा यह विवेचन यहां अप्रासंगिक है । पुलिस कमीशन की रपट श्री के०एफ० रुस्तमजी के लेख इस बारे में पठनीय है ।

सेना के बारे में असम के अनुभव दुखद रहे हैं । मेरी जानकारी पूरी नहीं होने से अधिक विवेचन करने में असमर्थता है ।

कुल मिलाकर हालत बहुत बेचैन करने वाली और उससे भी दुःखद बात यह है कि आगे का रास्ता बंद है । यदि ऐसे समय सामान्य आदमी अगर भाग्यवादी बन जाए तो अचरज नहीं होना चाहिए । (सप्रेस)

नोट : लेख का उपयोग होने पर कतरन एवं पारिश्रमिक की राशि
कृपया सर्वोदय प्रेस सर्विस के नाम भेजें ।